अंक 1 संस्करण 1 जुलाई 2026

देवभूमि नवोदयन

जवाहर नवोदय विद्यालय उत्तराखंड के नवोदयन को जोड़ने का प्रयास

* उपलब्धियों का उत्सव
* कैंपस से करियर तक
* यादों का सफर

कैंपस से करियर तक
हर नवोदयन के लिए मार्गदर्शन, विकास और अवसर प्रदान करना।

पूर्व छात्रों का जुड़ाव
मजबूत साथ मिलकर, पीढ़ियों और भौगोलिक क्षेत्रों को जोड़ना।

समाज को लौटाएँ
मार्गदर्शन, सहयोग और योगदान के माध्यम से भविष्य के नवोदयनों को सशक्त बनाना।

देवभूमि पर गर्व
उत्तराखंड की संस्कृति, विरासत और आत्मा का उत्सव मनाना।

देवभूमि नवोदयन की परिकल्पना

प्रिय नवोदय परिवार,

अत्यंत हर्ष और गर्व के साथ हम *"देवभूमि नवोदयन"* के जुलाई 2026 अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। यह पत्रिका केवल शब्दों और चित्रों का संकलन नहीं है, बल्कि उत्तराखण्ड के नवोदय परिवार की भावनाओं, उपलब्धियों, अनुभवों और सामाजिक सरोकारों का जीवंत दस्तावेज है। यह मंच उन हजारों नवोदयनों को जोड़ने का माध्यम है, जिन्होंने देश के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा, परिश्रम और संस्कारों के बल पर विशिष्ट पहचान बनाई है।

नवोदय विद्यालय केवल शिक्षा का संस्थान नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों की प्रयोगशाला है। यहाँ प्राप्त शिक्षा, अनुशासन, सह-अस्तित्व, राष्ट्रीय एकता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विद्यार्थियों को एक बेहतर नागरिक बनने की प्रेरणा देती है। आज जब हम अपने पूर्व छात्रों की उपलब्धियों को देखते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि नवोदय की शिक्षा ने उन्हें केवल सफल पेशेवर ही नहीं, बल्कि संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक भी बनाया है।

उत्तराखण्ड, जिसे देवभूमि के नाम से जाना जाता है, अपनी प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिक चेतना के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। इसी भूमि के नवोदयन भी अपनी कर्मठता, सादगी और उत्कृष्टता के लिए जाने जाते हैं। देश-विदेश के विभिन्न क्षेत्रों—प्रशासन, शिक्षा, विज्ञान, रक्षा, चिकित्सा, उद्योग, सूचना प्रौद्योगिकी, साहित्य और सामाजिक सेवा—में उत्तराखण्ड के नवोदयन अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रहे हैं। उनकी सफलताओं की कहानियाँ आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

आज के समय में जब समाज अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब पूर्व छात्रों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। नवोदयन केवल अपने व्यक्तिगत विकास तक सीमित न रहें, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास में भी सक्रिय भागीदारी निभाएँ। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का प्रसार, पर्यावरण संरक्षण, डिजिटल साक्षरता, युवाओं का मार्गदर्शन और सामाजिक समरसता जैसे क्षेत्रों में हमारी सामूहिक भागीदारी सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि नवोदय ने हमें जो अवसर प्रदान किए हैं, उनका प्रतिदान समाज को देना हमारा नैतिक दायित्व है।

देवभूमि नवोदयन का उद्देश्य केवल समाचारों का प्रकाशन नहीं, बल्कि नवोदयन समुदाय के बीच संवाद, सहयोग और सहभागिता को सुदृढ़ बनाना है। यह पत्रिका हमारे अनुभवों, विचारों और उपलब्धियों को साझा करने का माध्यम है। हमें प्रसन्नता है कि इस अंक में विभिन्न जिलों के नवोदयनों के लेख, संस्मरण, उपलब्धियाँ, सामाजिक गतिविधियाँ तथा रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ सम्मिलित की गई हैं। हमें विश्वास है कि ये सामग्री पाठकों को प्रेरित करने के साथ-साथ नवोदय परिवार के प्रति गर्व की अनुभूति भी कराएगी।

आज का युग ज्ञान, नवाचार और तकनीक का युग है। बदलती परिस्थितियों में युवाओं के सामने अवसर भी हैं और चुनौतियाँ भी। ऐसे समय में नवोदय की मूल भावना—"प्रज्ञानं ब्रह्म" अर्थात ज्ञान ही सर्वोच्च शक्ति है—और अधिक प्रासंगिक हो जाती है। हमें अपने ज्ञान, कौशल और अनुभव का उपयोग समाज के व्यापक हित में करना होगा। साथ ही, नई पीढ़ी को सही दिशा, मार्गदर्शन और अवसर प्रदान करने के लिए भी हमें आगे आना होगा।

यह भी सुखद है कि उत्तराखण्ड के नवोदयन विभिन्न मंचों के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और सामाजिक, शैक्षिक तथा मानवीय कार्यों में सक्रिय योगदान दे रहे हैं। चाहे प्राकृतिक आपदाओं के समय सहायता का कार्य हो, विद्यार्थियों को करियर मार्गदर्शन प्रदान करना हो अथवा सामुदायिक विकास की पहल—नवोदयन सदैव अग्रणी भूमिका निभाते रहे हैं। यही भावना हमारी सबसे बड़ी शक्ति है और इसी के बल पर हम एक सशक्त, संगठित एवं प्रेरणादायी नवोदय समुदाय का निर्माण कर सकते हैं।

इस अवसर पर हम उन सभी पूर्व छात्रों, शिक्षकों, संरक्षकों और सहयोगियों का हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सहयोग से *देवभूमि नवोदयन* निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। आपकी सहभागिता ही इस पत्रिका की वास्तविक शक्ति है। हम सभी पाठकों से आग्रह करते हैं कि अपने सुझाव, लेख, अनुभव और उपलब्धियाँ हमारे साथ साझा करें, ताकि यह मंच और अधिक समृद्ध एवं प्रभावी बन सके।

अंत में, हम आशा करते हैं कि यह अंक आपको ज्ञान, प्रेरणा और आत्मीयता का अनुभव कराएगा। आइए, हम सभी मिलकर नवोदय की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाएँ, समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करें और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनें।

नवोदय की भावना, उत्तराखण्ड की अस्मिता और राष्ट्र निर्माण के संकल्प के साथ—

संपादकीय मंडल
देवभूमि नवोदयन
उत्तराखण्ड नवोदयन परिवार
जुलाई 2026

विषय सूची

देवभूमि नवोदयन की परिकल्पना 2

हमारा आधार हमारा विद्यालय 4

विनोद गिरि गोस्वामी: एक भूतपूर्व नवोदयन की प्रेरक कहानी 5

हिमांशु कफल्टिया : संघर्ष, सफलता और समाजसेवा की गाथा 7

नवोदय से निकला एक सपना: संघर्ष, संकल्प और सफलता की मिसाल – राजेंद्र धनोतिया (राजू भैया) 9

विवेक तिवारी : वित्तीय समावेशन के माध्यम से बदलाव के शिल्पकार SATYA Micro Capital के संस्थापक की प्रेरक यात्रा 11

जवाहर नवोदय विद्यालय, ताड़ीखेत (अल्मोड़ा): शिक्षा, संस्कार और उत्कृष्टता की अनुपम यात्रा 14

नवोदय : एक भावना (अनुजा कौशिक) 16

उत्तराखंड के विभिन्न जवाहर नवोदय विद्यालय के भूतपूर्व एवं वर्तमान में अध्ययनरत छात्रों की उपलब्धियों के संकलन हेतु पत्रिका

विस्तृत जानकारी हेतु निम्न पते पर संपर्क करें

देवभूमि नवोदयन, 124 विष्णुलोक कॉलोनी फेज 2 तपोवन रायपुर रोड देहरादून -248008
ईमेल : devbhoominavodayan@gmail.com Mobile Number - 7983582723

संपादक मंडल

डॉ. राजीव कुमार (पीएचडी, पर्यावरण विज्ञान) क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू क्षेत्रीय केंद्र देहरादून
(1993 पास आउट बैच जवाहर नवोदय विद्यालय रुद्रपुर उधम सिंह नगर)





अनुजा कौशिक समाज सेविका एवं लेखिका
(1995 पास आउट बैच जवाहर नवोदय विद्यालय तितरम कैथल हरियाणा)

हिमांशु पासवान (2023 पास आउट बैच जवाहर नवोदय विद्यालय रुद्रपुर उधम सिंह नगर)
IIT गुवाहाटी से इलेक्ट्रॉनिक्स और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में B.Tech में अध्ययनरत



सुमन लता (1989 पास आउट बैच जवाहर नवोदय विद्यालय बुटाना सोनीपत)
DIET पीतमपुरा दिल्ली में सहायक प्रोफेसर

हमारा आधार हमारा विद्यालय.....

उत्तराखण्ड के पर्वतीय और दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की अलख जगाने वाले जवाहर नवोदय विद्यालय आज हजारों विद्यार्थियों के भविष्य को नई दिशा दे रहे हैं। राज्य के विभिन्न जनपदों में संचालित नवोदय विद्यालय शिक्षा, अनुशासन, संस्कार और उत्कृष्ट परिणामों के कारण अभिभावकों तथा विद्यार्थियों के बीच विशेष पहचान बना चुके हैं।

नवोदय विद्यालय समिति द्वारा संचालित ये विद्यालय ग्रामीण क्षेत्रों के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को निःशुल्क आवासीय शिक्षा प्रदान करते हैं। उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा, नैनीताल, चमोली, रुद्रप्रयाग, उत्तरकाशी, ऊधमसिंह नगर सहित विभिन्न जनपदों में संचालित जवाहर नवोदय विद्यालय आधुनिक शिक्षा और सर्वांगीण विकास के केंद्र के रूप में कार्य कर रहे हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि राज्य के दुर्गम पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थियों के लिए नवोदय विद्यालय अवसरों के नए द्वार खोल रहे हैं। यहाँ विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ पुस्तकालय, विज्ञान प्रयोगशालाएँ, कंप्यूटर शिक्षा, खेल सुविधाएँ तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का लाभ मिलता है। नवोदय विद्यालय समिति के अंतर्गत संचालित ये विद्यालय कक्षा 6 से 12 तक सीबीएसई पाठ्यक्रम पर आधारित शिक्षा प्रदान करते हैं।

शिक्षा विशेषज्ञों के अनुसार उत्तराखण्ड के अनेक छात्र-छात्राएँ नवोदय विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त कर चिकित्सा, अभियंत्रण, प्रशासनिक सेवाओं, रक्षा सेवाओं तथा अन्य प्रतिष्ठित क्षेत्रों में उल्लेखनीय सफलता हासिल कर रहे हैं। इन विद्यालयों की आवासीय व्यवस्था विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता, अनुशासन और नेतृत्व क्षमता विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

हाल के वर्षों में नवोदय विद्यालयों में डिजिटल शिक्षा और आधुनिक अधोसंरचना को भी बढ़ावा मिला है। कई विद्यालयों में स्मार्ट कक्षाएँ, उन्नत छात्रावास सुविधाएँ और तकनीक आधारित शिक्षण व्यवस्थाएँ विकसित की गई हैं, जिससे विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षा के अनुरूप वातावरण प्राप्त हो रहा है।

नवोदय विद्यालयों में प्रवेश के लिए आयोजित जवाहर नवोदय विद्यालय चयन परीक्षा (JNVST) देश की प्रमुख विद्यालयी प्रवेश परीक्षाओं में से एक मानी जाती है। प्रत्येक वर्ष बड़ी संख्या में ग्रामीण विद्यार्थी इस परीक्षा में भाग लेते हैं। वर्ष 2026 के लिए भी प्रवेश प्रक्रिया और परिणामों को लेकर विद्यार्थियों तथा अभिभावकों में विशेष उत्साह देखा गया।

शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोगों का कहना है कि नवोदय विद्यालय केवल शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थान नहीं हैं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के प्रभावी माध्यम भी हैं। यहाँ विभिन्न सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थी एक साथ रहकर राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक समरसता और सहअस्तित्व के मूल्यों को सीखते हैं। नवोदय की माइग्रेशन योजना विद्यार्थियों को देश की विविध संस्कृतियों को समझने का अवसर भी प्रदान करती है।

उत्तराखण्ड में नवोदय विद्यालयों की बढ़ती लोकप्रियता का एक प्रमुख कारण उनकी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम भी हैं। ग्रामीण परिवारों के लिए ये विद्यालय आशा और विश्वास का केंद्र बन चुके हैं। अनेक पूर्व छात्र आज देश-विदेश में विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं और नवोदय की परंपरा को गौरवान्वित कर रहे हैं।

शिक्षाविदों का मानना है कि यदि इसी प्रकार नवोदय विद्यालयों को संसाधनों और नवाचारों से सशक्त बनाया जाता रहा, तो आने वाले वर्षों में ये संस्थान उत्तराखण्ड के शैक्षिक विकास में और अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। ग्रामीण प्रतिभाओं को अवसर प्रदान करने की दिशा में जवाहर नवोदय विद्यालय आज भी शिक्षा के क्षेत्र में एक सफल और प्रेरणादायी मॉडल के रूप में स्थापित हैं।

विनोद गिरि गोस्वामी: एक भूतपूर्व नवोदयन की प्रेरक कहानी

"सपने वही सच होते हैं, जिन्हें पूरा करने का साहस भी हो।" यह कथन भूतपूर्व नवोदयन विनोद गिरि गोस्वामी के जीवन पर पूरी तरह सटीक बैठता है। साधारण पृष्ठभूमि से निकलकर प्रशासनिक सेवा के उच्च पद तक पहुंचने की उनकी यात्रा संघर्ष, समर्पण और सतत परिश्रम की एक प्रेरक मिसाल है।



विनोद गिरि गोस्वामी
1993 बैच पास आउट
JNV उधम सिंह नगर उत्तराखंड

उत्तराखंड की देवभूमि में जन्मे विनोद गिरि गोस्वामी का बचपन सामान्य ग्रामीण परिवेश में बीता। सीमित संसाधनों के बावजूद उनके माता-पिता ने शिक्षा को जीवन का सबसे बड़ा साधन माना। बचपन से ही विनोद मेधावी, अनुशासित और जिज्ञासु छात्र थे। उनके अंदर कुछ नया सीखने और समाज के लिए कुछ सार्थक करने की इच्छा प्रारंभ से ही दिखाई देती थी।

जब उनका चयन जवाहर नवोदय विद्यालय में हुआ, तब उनके जीवन ने एक नया मोड़ लिया। नवोदय विद्यालय ने उन्हें केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही नहीं दी, बल्कि आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और राष्ट्रीय दृष्टिकोण भी प्रदान किया। विद्यालय का आवासीय वातावरण, अनुशासित दिनचर्या और विविध पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के साथ रहने का अनुभव उनके व्यक्तित्व निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हुआ।

नवोदय के दिनों में वे पढ़ाई के साथ-साथ वाद-विवाद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और खेल गतिविधियों में भी सक्रिय भाग लेते थे। शिक्षकों का मार्गदर्शन और सहपाठियों का सहयोग उनके लिए प्रेरणा का स्रोत बना। वे अक्सर कहा करते थे कि नवोदय ने उन्हें यह विश्वास दिलाया कि किसी भी बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आर्थिक संसाधनों से अधिक आवश्यक है दृढ़ संकल्प और मेहनत।

विद्यालय के दिनों में ही उनके मन में प्रशासनिक सेवा में जाने का विचार अंकुरित हुआ। वे अपने आसपास समाज की समस्याओं को देखते और सोचते थे कि यदि सही अवसर मिले तो वे लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

नवोदय से विद्यालयी शिक्षा पूर्ण करने के बाद उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की और इतिहास विषय में स्नातकोत्तर उपाधि अर्जित की। अध्ययन के दौरान उन्होंने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी जारी रखी। यह समय उनके जीवन का सबसे चुनौतीपूर्ण चरण था। सीमित संसाधनों, प्रतिस्पर्धा और असफलताओं के बावजूद उन्होंने अपने लक्ष्य से समझौता नहीं किया।

कई बार परिस्थितियां कठिन हुईं, लेकिन उन्होंने हर चुनौती को सीखने का अवसर माना। उनकी सफलता का मूल मंत्र था—निरंतर अध्ययन, समय का सदुपयोग और आत्मविश्वास। यही गुण आगे चलकर उन्हें प्रशासनिक सेवा तक ले गए।



लगातार परिश्रम और दृढ़ निश्चय के बल पर विनोद गिरि गोस्वामी ने प्रशासनिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल कीं। वे उत्तराखंड प्रशासनिक व्यवस्था में विभिन्न जिम्मेदार पदों पर कार्य करते हुए जनहित के कार्यों से जुड़े रहे। बाद में उनका चयन भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) में हुआ और वे उत्तराखंड कैडर के अधिकारी बने। वर्तमान में वे राज्य

सरकार में महत्वपूर्ण प्रशासनिक दायित्वों का निर्वहन कर चुके हैं तथा शहरी विकास विभाग में उच्च पदों पर कार्यरत रहे हैं।

एक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में उनकी पहचान संवेदनशील, कर्मठ और जनोन्मुख अधिकारी की रही है। उन्होंने विकास योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन, प्रशासनिक सुधारों और जनसेवा को प्राथमिकता दी। उनके कार्यों में पारदर्शिता, जवाबदेही और जनहित की स्पष्ट झलक दिखाई देती है।

सफलता के शिखर पर पहुंचने के बाद भी विनोद गिरि गोस्वामी अपने नवोदय परिवार से जुड़े रहे हैं। वे समय-समय पर विद्यार्थियों और युवा नवोदयनों को मार्गदर्शन देते हैं तथा उन्हें बड़े सपने देखने और उन्हें पूरा करने के लिए निरंतर प्रयास करने की प्रेरणा देते हैं।

उनका मानना है कि नवोदय विद्यालय केवल एक शिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि जीवन निर्माण की प्रयोगशाला है, जहां से निकलने वाला प्रत्येक छात्र समाज में सकारात्मक परिवर्तन का वाहक बन सकता है। वे युवाओं को यह संदेश देते हैं कि परिस्थितियां चाहे जैसी भी हों, यदि लक्ष्य स्पष्ट हो और प्रयास निरंतर हों तो सफलता अवश्य मिलती है।

विनोद गिरि गोस्वामी की जीवन यात्रा यह सिद्ध करती है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि और सीमित संसाधन किसी व्यक्ति की उड़ान को सीमित नहीं कर सकते। नवोदय विद्यालय से प्राप्त संस्कार, कठिन परिश्रम और समाज के प्रति समर्पण ने उन्हें एक सफल प्रशासक और प्रेरणादायक व्यक्तित्व बनाया है।

आज वे हजारों नवोदय विद्यार्थियों के लिए आशा, प्रेरणा और सफलता का प्रतीक हैं। उनकी कहानी हमें यह सिखाती है कि शिक्षा, अनुशासन और दृढ़ संकल्प के बल पर कोई भी छात्र अपने सपनों को साकार कर सकता है। यही नवोदय की वास्तविक शक्ति है और यही एक सच्चे नवोदयन की पहचान भी।

विनोद गिरि गोस्वामी की कहानी हर उस विद्यार्थी के लिए प्रेरणा है जो सीमित संसाधनों के बावजूद बड़े सपने देखने का साहस रखता है।

हिमांशु कफल्टिया : संघर्ष, सफलता और समाजसेवा की गाथा

उत्तराखण्ड की पर्वतीय धरती ने अनेक ऐसे व्यक्तित्व दिए हैं जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए सफलता के नए आयाम स्थापित किए। ऐसे ही प्रेरणादायी व्यक्तित्व हैं हिमांशु कफल्टिया, जिन्होंने सीमित संसाधनों और कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के बावजूद अपनी मेहनत, लगन और दृढ़ संकल्प के बल पर प्रशासनिक सेवा में उल्लेखनीय स्थान प्राप्त किया। आज वे केवल एक सफल प्रशासनिक अधिकारी ही नहीं, बल्कि शिक्षा और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में भी एक प्रेरणास्रोत के रूप में पहचाने जाते हैं।



हिमांशु कफल्टिया
2003 बैच पास आउट
JNV उधम सिंह नगर , उत्तराखंड

हिमांशु कफल्टिया का जन्म 19 दिसंबर 1986 को उत्तराखण्ड के नैनीताल जनपद के दूरस्थ तुसराड़ (Tusrar) गाँव में हुआ। उनका बचपन अत्यंत साधारण परिस्थितियों में बीता। उनके गाँव में न तो सड़क की सुविधा थी और न ही विद्यालय। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्हें प्रतिदिन कई किलोमीटर पैदल चलना पड़ता था। पहाड़ की कठिन भौगोलिक परिस्थितियों और सीमित संसाधनों के बीच उन्होंने शिक्षा को ही अपने जीवन का सबसे बड़ा साधन बनाया।

उनके पिता घनश्याम कफल्टिया शिक्षा विभाग में कार्यरत थे और बाद में जूनियर हाईस्कूल के प्रधानाचार्य के पद से सेवानिवृत्त हुए। परिवार में शिक्षा और अनुशासन का वातावरण था, जिसने हिमांशु के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शिक्षा के प्रति उनकी लगन ने उन्हें निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने अपने करियर की शुरुआत भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC) में अभिकर्ता तथा बाद में प्रशासनिक दायित्वों से की। आर्थिक और सामाजिक चुनौतियों के बावजूद उन्होंने प्रशासनिक सेवा में जाने का सपना नहीं छोड़ा।

लगातार प्रयासों और कठिन परिश्रम के परिणामस्वरूप उन्होंने उत्तराखण्ड लोक सेवा आयोग (PCS) परीक्षा उत्तीर्ण की। वर्ष 2016 बैच की पीसीएस परीक्षा में उन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए शीर्ष स्थान प्राप्त किया। यह उपलब्धि उनके संघर्षपूर्ण जीवन की सबसे बड़ी सफलताओं में से एक थी। प्रशासनिक सेवा में आने के बाद हिमांशु कफल्टिया ने विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। उन्होंने पंचायत राज विभाग में कार्यकारी अधिकारी तथा बाद में उपजिलाधिकारी (SDM) के रूप में अपनी जिम्मेदारियों का सफल निर्वहन किया। प्रशासनिक अधिकारी के रूप में उनकी पहचान संवेदनशील, जनोन्मुखी और नवाचारी अधिकारी की रही है।



पर्वतीय क्षेत्रों की समस्याओं को उन्होंने स्वयं निकट से देखा और अनुभव किया था। यही कारण है कि प्रशासनिक दायित्वों के दौरान उन्होंने आम जनता, विशेषकर युवाओं और विद्यार्थियों के हितों को प्राथमिकता दी। उनका मानना है कि शिक्षा और ज्ञान ही समाज को स्थायी रूप से बदल सकते हैं।

पुस्तकालय आंदोलन : एक अनूठी पहल



हिमांशु कफल्टिया की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक उत्तराखण्ड के दूरस्थ क्षेत्रों में पुस्तकालयों की स्थापना है। उन्होंने यह महसूस किया कि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले अनेक प्रतिभाशाली युवाओं के पास पुस्तकें, अध्ययन सामग्री और शांत वातावरण उपलब्ध नहीं है। इसी समस्या के समाधान के लिए उन्होंने वर्ष 2020 से ग्रामीण पुस्तकालयों की स्थापना का अभियान प्रारम्भ किया।

उनके प्रयासों से उत्तराखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों में 16 से अधिक पुस्तकालय स्थापित किए गए। इन पुस्तकालयों ने हजारों युवाओं को अध्ययन की सुविधा प्रदान की। विशेष बात यह रही कि इन पुस्तकालयों की स्थापना में स्थानीय समुदाय, ग्राम पंचायतों और स्वयंसेवकों की सक्रिय भागीदारी रही।

उनकी इस पहल का परिणाम यह हुआ कि अनेक युवाओं ने विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की। रिपोर्टों के अनुसार, इन पुस्तकालयों से जुड़े अनेक अभ्यर्थी प्रशासनिक सेवाओं एवं अन्य सरकारी सेवाओं में चयनित हुए।

प्रमुख उपलब्धियाँ



- उत्तराखण्ड पीसीएस परीक्षा में शीर्ष स्थान प्राप्त किया।
- प्रशासनिक सेवा में उत्कृष्ट एवं जनोन्मुखी कार्यशैली के लिए पहचान बनाई।
- उत्तराखण्ड के दूरस्थ क्षेत्रों में 16 से अधिक पुस्तकालयों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए अध्ययन संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की।
- ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और पठन-पाठन की संस्कृति को बढ़ावा दिया।

हिमांशु कफल्टिया की जीवन यात्रा यह सिद्ध करती है कि कठिन परिस्थितियाँ सफलता के मार्ग में बाधा नहीं बनतीं, बल्कि उन्हें पार करने का साहस ही व्यक्ति को असाधारण बनाता है। एक ऐसे गाँव से निकलकर, जहाँ सड़क और विद्यालय जैसी मूलभूत सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं थीं, प्रशासनिक सेवा के शीर्ष पदों तक पहुँचना उनकी असाधारण मेहनत और दृढ़ निश्चय का प्रमाण है।

आज वे केवल एक अधिकारी नहीं, बल्कि हजारों युवाओं के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। उनकी सोच, कार्यशैली और समाज के प्रति प्रतिबद्धता यह संदेश देती है कि सच्ची सफलता वही है जो समाज के विकास और दूसरों के उत्थान का माध्यम बने।

हिमांशु कफल्टिया का जीवन संघर्ष, शिक्षा, सेवा और नेतृत्व का उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत सफलता को समाज के कल्याण से जोड़ा और यह दिखाया कि एक संवेदनशील प्रशासनिक अधिकारी किस प्रकार जनजीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। उनकी उपलब्धियाँ आने वाली पीढ़ियों को बड़े सपने देखने और उन्हें साकार करने के लिए प्रेरित करती रहेंगी।

नवोदय से निकला एक सपना: संघर्ष, संकल्प और सफलता की मिसाल – राजेंद्र धनोतिया (राजू भैया)

नवोदय विद्यालय केवल शिक्षा का केंद्र नहीं, बल्कि सपनों को साकार करने की प्रयोगशाला है। यहां से निकलने वाले विद्यार्थी जीवन के हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रहे हैं। ऐसे ही एक प्रेरणादायक नवोदयन हैं राजेंद्र धनोतिया, जिन्होंने संघर्षों को अवसर में बदलते हुए उद्यमिता की एक अनूठी मिसाल स्थापित की है।



राजेंद्र धनोतिया
2001 बैच पास आउट
JNV मुलथान, धार, मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश और राजस्थान की सीमा पर स्थित छोटे से गांव सेमली के निवासी राजेंद्र धनोतिया ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा जवाहर नवोदय विद्यालय से प्राप्त की। वे 12वीं कक्षा (वाणिज्य संकाय) में विद्यालय के मेधावी विद्यार्थियों में शामिल रहे। पढ़ाई में उत्कृष्ट प्रदर्शन के बावजूद उनका सपना केवल नौकरी प्राप्त करना नहीं था, बल्कि स्वयं कुछ नया और सार्थक करना था।

इसी उद्देश्य को लेकर वे पढ़ाई पूरी करने के बाद इंदौर पहुंचे। सीमित संसाधनों और कठिन परिस्थितियों के बीच उन्होंने जीवन की शुरुआत छोटे-मोटे कार्यों से की। इंदौर रेलवे स्टेशन के बाहर सफाई कार्य सहित अनेक जिम्मेदारियां निभाते हुए उन्होंने संघर्ष का वह दौर देखा, जिसे अधिकांश लोग हार मानने का कारण बना लेते हैं। लेकिन नवोदय से मिले आत्मविश्वास, अनुशासन और संघर्षशीलता ने उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

कुछ समय बाद उन्होंने एक छोटी सी चाय की दुकान प्रारंभ की। लोगों को उनकी बनाई चाय का स्वाद पसंद आने लगा। यहीं से उनके मन में कुछ अलग करने का विचार आया। भारतीय आयुर्वेद, प्राकृतिक जीवनशैली और स्वास्थ्य के प्रति रुचि ने उन्हें एक विशिष्ट आयुर्वेदिक चाय विकसित करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने इसका नाम रखा – “उत्साह चाय”।

आज ‘उत्साह आयुर्वेदिक चाय’ इंदौर के अनेक प्रमुख क्षेत्रों और व्यावसायिक केंद्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुकी है। एक छोटे से स्टॉल से शुरू हुआ यह सफर अब कई आउटलेट्स तक पहुंच चुका है। उनकी पहल से सैकड़ों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार मिला है। प्रतिदिन हजारों लोग उनकी चाय का आनंद लेते हैं, जो उनकी गुणवत्ता और विश्वास का प्रमाण है। व्यवसाय के साथ-साथ राजेंद्र सामाजिक सरोकारों से भी जुड़े हुए हैं। वे एक प्रमाणित योग प्रशिक्षक हैं और समय निकालकर लोगों को निःशुल्क योग प्रशिक्षण देते हैं। उनका मानना है कि “चाय शरीर की थकान दूर करती है और योग मन को ऊर्जा प्रदान करता है।”

आज इंदौर में "उत्साह रेस्टोरेंट" एक प्रतिष्ठित और विश्वसनीय ब्रांड के रूप में स्थापित है। इसकी पाँच सफल शाखाएँ शहर के विभिन्न क्षेत्रों में संचालित हो रही हैं। इसके साथ ही उनकी आधुनिक मैन्युफैक्चरिंग यूनिट खाद्य उत्पादों के निर्माण और आपूर्ति का कार्य कर रही है, जहाँ उच्च गुणवत्ता के फास्ट फूड, चाइनीज़ व्यंजन, नाश्ते और अन्य स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ तैयार किए जाते हैं।



स्कीम नंबर 78 स्थित उनकी प्रमुख शाखा इतनी लोकप्रिय है कि स्थानीय लोग उस क्षेत्र को ही "उत्साह चौराहा" के नाम से पहचानने लगे हैं। यह उपलब्धि उनके व्यवसाय की सफलता के साथ-साथ ग्राहकों के विश्वास और प्रेम को भी दर्शाती है।

राजू भैया की कंपनी "सेमली फूड प्राइवेट लिमिटेड" आज एक सशक्त व्यावसायिक संस्था के रूप में विकसित हो चुकी है। उनकी संस्था में 400 से अधिक कर्मचारी कार्यरत हैं, जिन्हें नियमित रोजगार, सम्मानजनक कार्य वातावरण और आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। इस प्रकार वे प्रत्यक्ष रूप से सैकड़ों परिवारों के जीवन में आर्थिक स्थिरता और खुशहाली का आधार बने हुए हैं।

किन्तु राजू भैया की पहचान केवल एक सफल उद्यमी तक सीमित नहीं है। वे अपने नवोदयी परिवार से गहरे भावनात्मक रूप से जुड़े हुए हैं। उनकी संस्था में अनेक नवोदय पूर्व छात्र विभिन्न महत्वपूर्ण और जिम्मेदार पदों पर कार्यरत हैं। देश के किसी भी हिस्से से यदि किसी नवोदयी को रोजगार, मार्गदर्शन या सहयोग की आवश्यकता होती है, तो राजू भैया सदैव सहायता के लिए तत्पर रहते हैं।
उनका मानना है कि सफलता का वास्तविक अर्थ केवल स्वयं आगे बढ़ना नहीं, बल्कि दूसरों को भी आगे बढ़ने का अवसर देना है। यही कारण है कि वे नवोदय परिवार के युवाओं को रोजगार और आत्मनिर्भरता के अवसर प्रदान करने को अपनी सामाजिक जिम्मेदारी मानते हैं।

राजेंद्र धनोतिया (राजू भैया) की सफलता की कहानी केवल एक व्यवसायिक उपलब्धि नहीं, बल्कि नेतृत्व, सेवा, सामाजिक उत्तरदायित्व और नवोदयी संस्कारों की एक प्रेरक गाथा है। उनका जीवन संदेश देता है कि यदि लक्ष्य स्पष्ट हो, संकल्प दृढ़ हो और समाज के प्रति संवेदनशीलता बनी रहे, तो व्यक्ति न केवल स्वयं सफलता प्राप्त कर सकता है, बल्कि सैकड़ों लोगों के जीवन में भी सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है।

राजेंद्र धनोतिया की यात्रा यह सिद्ध करती है कि सफलता का मार्ग कभी आसान नहीं होता, लेकिन दृढ़ संकल्प, निरंतर परिश्रम और सकारात्मक सोच के साथ हर चुनौती को अवसर में बदला जा सकता है। उनकी कहानी नवोदय परिवार के प्रत्येक छात्र और पूर्व छात्र के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

यह उपलब्धि केवल व्यक्तिगत सफलता की कहानी नहीं, बल्कि नवोदय शिक्षा प्रणाली द्वारा विकसित उन मूल्यों का उदाहरण है, जो विद्यार्थियों को जीवन में आगे बढ़ने, समाज को दिशा देने और आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करते हैं।

देवभूमि नवोदयन परिवार राजेंद्र धनोतिया को उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता है और आशा करता है कि उनकी प्रेरक यात्रा आने वाली पीढ़ियों को भी अपने सपनों को साकार करने का साहस प्रदान करती रहेगी।



Wedded to good causes, restaurateur gives back to society without fanfare

Free milk to about 100 babies per month, providing milk to hospital

Free yoga sessions, complimentary health juices

Giving about 100 employees free accommodation and two meals a day

NIDHI DEVLIYA
city.indore@fpj.co.in

"Generosity blooms when we give back to society without expecting petals in return, as true beauty lies in the selfless essence of our contributions," said Rajendra Danotiya the owner of Utsah restaurant who believes highly in simplicity and doing something for society without fanfare or publicity.

Dhanotiya, popularly known as 'Raju Bhaiya,' is quietly contributing to society, ensuring that the left hand remains unaware of the welfare being done by the right hand.

For the past two years, Dhanotiya has been offering free yoga sessions in a local park, followed by complimentary healthy juices and sprouts near the restaurant thereby dedicating himself to assisting others in cultivating a healthy and mentally peaceful lifestyle.

Approximately 500 people regularly partake in this and the number even rises to over 1,000 during the summer season. In addition to providing nourishment, he encourages the crowd to savour the snacks while seated, emphasising the importance of chewing for health benefits. Adding a spiritual touch, they play Ramayan Chopayi, instilling positive and spiritual thoughts during this gathering.

The healthy juice comprises ingredients such as Amla, Ginger and Tulsi, each bringing associated health benefits. This unique blend contributes to a robust respiratory system, supports digestive health, stimulates the body's natural immunity, and enhances immune system functionality. The special recipe not only promotes good blood flow but also acts as an anti-ageing elixir for those who partake in its refreshing goodness.

In addition, Raju generously provides free milk to babies - new-borns to 1.5-2 years old. Over 100 kids benefit from this programme in a month, and milk is also supplied to a private hospital situated behind his restaurant, extending his commitment to community well-being.

In a conversation with the Free Press, Raju Bhaiya shared that Utsah restaurant employs approximately 168 workers. Remarkably, 100 of these employees are provided with accommodation without any rent, along with two meals a day, in addition to their regular salaries. The diverse workforce hails from various parts of the country, specialising in different sections such as bakery, sweets, culinary, and fast food. Drawing from his Navodaya school background, Raju has also assisted 18 individuals who graduated from the same school, providing them with opportunities for employment at restaurant.

HUMBLE BEGINNINGS

Rajendra Dhanotiya hails from the small village of Selmi, near Shamgarh, boasting a population of 500-600 people with approximately 50-60 houses. He passed out from Navodaya School and then did his graduation but has not collected his graduation degree till date. Despite his successful restaurant ownership, marked by a golden heart, he doesn't own a vehicle. Arriving in Indore in 2001, his initial job paid a modest 1,200 rupees a month. Fueled by an entrepreneurial spirit, he took risks and persevered, ultimately realising his dream of owning a business. Starting his restaurant three years ago post-COVID, Rajendra is committed to contributing to the well-being of society, aiming to impact every individual possible. As per his conviction, contributing to the well-being and progress of society starts with a person himself/herself taking the initiative. Another noteworthy aspect is that despite being actively involved in working for society, he abstains from using any social media platform to give publicity to what he is doing.

FREE PRESS JOURNAL Fri, 15 December 2023
https://epaper.freepressjournal.in/c/74118155

चाय की टपरी से शुरुआत कर खड़ी कर दी 300 करोड़ रुपए की कंपनी

उत्साह रेस्टोरेंट - राजेन्द्र धनोतिया (राजू भैया)

दैनिक भास्कर Food AWARD

उत्साह चाय और रेस्तरां

अपनी सारी जमा पूंजी, बैंक लोन और दोस्तों से उधार लेकर 2.5 करोड़ रुपए का प्लॉट खरीदा और उस पर एक चाय की टपरी लगाना शुरू कर दी। यह बात सुनने में जितनी विरली है उतने ही विरले व्यक्ति हैं इस काम को करने वाले राजेन्द्र धनोतिया। इंदौर शहर में कुछ सालों पहले ही इनके कदम पड़े है और शहर के एक चौराहे का नाम इन्हीं के रेस्टोरेंट के नाम पर रख दिया गया है। अपने भाई पवन धनोतिया के साथ मिलकर वे उत्साह रेस्टोरेंट के जरिये लगातार शहरवासियों के बीच उत्साह फैला रहे हैं। सवाल उठता है कि ऐसा क्या है इस शख्स में जो इन्हें इतना खास बनाता है? **तो इसका जवाब केवल एक है मेहनत, मेहनत और मेहनत।**



राजेन्द्र धनोतिया (राजू भैया)
पवन धनोतिया

यह कहानी है विजय नगर के समीप उत्साह चौराहे पर स्थित उत्साह होटल के मालिक राजेन्द्र धनोतिया की। राजेन्द्र की खासियत है कि वे किसी भी परिस्थिति में हार नहीं मानते हैं और यही उनकी सफलता की कुंजी भी है। वर्तमान में वे नमकीन, मिष्ठान और बेकरी आइटम्स के प्रोडक्शन और सेल का बिजनेस करते हैं। अपने इसी बिजनेस को आगे बढ़ाने के लिए अक्टूबर 2020 में उन्होंने अपनी कंपनी रजिस्टर्ड की। वर्तमान में इस कंपनी की वैल्यू 300 करोड़ रुपए हो चुकी है और 2045 तक राजू भैया अपनी कंपनी को 1 लाख करोड़ की वैल्यू तक पहुंचाने और 1 लाख लोगों को रोजगार देने का विजन रखते हैं।

ऐसे हुई शुरुआत

राजू भैया मंदसौर जिले के एक छोटे गांव सेमली रूपा से हैं। उनके पिता खेती-किसानी करते हैं। नवोदय स्कूल से शिक्षा प्राप्त करने के बाद जब करियर बनाने की बारी आई तो राजेन्द्र ने इंदौर शहर को चुना। शुरुआत में उन्होंने रेलवे स्टेशन के पास एक एसटीडी-पीसीओ पर काम किया और जैसे-जैसे अवसर मिला आगे बढ़ते चले गए। उनकी रिस्क टेकिंग कैपेसिटी ही थी कि उन्होंने जल्द ही उस क्षेत्र की सबसे बड़ी दुकान किराए पर लेकर वहां चाय, समोसे और पोहा बेचना शुरू कर दिया। वे बताते है कि 1 साल में ही उन्होंने उस दुकान पर 56 लोगों को रोजगार दिया और नो प्रॉफिट नो लॉस की स्थिति में आ गए। हमेशा नए अवसर की खोज में रहने वाले राजेन्द्र ने अपनी लोकेशन का पूरा प्रयोग करने के उद्देश्य से जनरल टिकट काउंटर का लाइसेंस ले लिया और टिकट बेचने का काम भी शुरू कर दिया। सब कुछ बहुत अच्छा चल रहा था तभी उन्हें अपना जमा-जमाया बिजनेस और जगह दोनों छोड़नी पड़ी। इस घटना ने राजेंद्र को दोबारा जमीन पर लाकर खड़ा कर दिया। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और उत्साह रेस्टोरेंट की नींव रख दी।



बार-बार गिरकर उठे

अपनी सारी जमा पूंजी इनवेस्ट करके उन्होंने जमीन तो खरीद ली लेकिन कंस्ट्रक्शन के लिए उनके पास पैसे नहीं थे इसलिए चाय की टपरी लगाना शुरू कर दी। अपने आत्मीय व्यवहार और बेमिसाल चाय के स्वाद ने जल्दी ही उन्हें नई जगह पर पहचान दिलाना शुरू कर दी। वे कहते हैं कि मैं हमेशा खुद की तुलना मधुमक्खी से करता हूं जब वो कहीं भी शहद बना सकती है तो मैं क्यों नहीं? इसी सोच से चाय की दुकान शुरू की जो 1 साल में 2 से 2.5 लाख रुपए प्रति माह कमाकर देने लगी। 2018 तक मेरी छोटी दुकान उत्साह रेस्टोरेंट का रूप ले चुकी थी फिर 2020 में कोरोना के साथ एक बार फिर संघर्ष का दौर आया लेकिन, प्रभु कृपा से वो भी बीत गया। इस सफलता में मेरी पत्नी रक्षा धनोतिया का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।



बाबा रामदेव ने हरिद्वार बुलाकर किया प्रोत्साहित

राजू भैया को योग का भी काफी अनुभव है। वे रोजाना सवेरे गार्डन में योग सिखाते हैं। स्वास्थ्य के प्रति वे इतने सजग है कि पिछले 1.5 साल से वे अपने रेस्टोरेंट पर सुबह निशुल्क जूस और स्नाउट लोगों को उपलब्ध कराते हैं। वे बताते हैं कि इस दौरान हम काउंटर पर रामजी की चौपाई बजाते हैं ताकि लोगों के दिमाग में सकारात्मकता बनी रहें। हमारे यहां औषधीय दूध और औषधीय चाय के काउंटर भी है। इनके द्वारा किए जा रहे इन्हीं कार्यों से प्रभावित होकर बाबा रामदेव ने हरिद्वार बुलाकर इनके काम को सराहा और इन्हें प्रोत्साहित भी किया है। कई सेलिब्रिटी और नेता भी इनके रेस्टोरेंट में आकर इनके कार्यों की सराहना कर चुके हैं।

पैसा कमाना नहीं रोजगार देना है उद्देश्य

इतना पैसा कमाने के बाद भी राजू भैया बहुत सादा जीवन जीते है। उनके घर में एक गाड़ी तक नहीं है। वे कहते हैं कि मेरा उद्देश्य पैसा कमाना नहीं बल्कि बेरोजगारों को रोजगार देना है। वर्तमान में उनके रेस्त्रां में 148 लोग काम करते हैं। इनमें से 70 से ज्यादा लोग रहते भी यहीं है। जल्द ही वे अपने नए आउटलेट भी शहर के अलग-अलग हिस्सों में शुरू करने जा रहे हैं। और साल 2045 तक 1 लाख लोगों को रोजगार देने का लक्ष्य रखते हैं।



विवेक तिवारी : वित्तीय समावेशन के माध्यम से बदलाव के शिल्पकार SATYA Micro Capital के संस्थापक की प्रेरक यात्रा



विवेक तिवारी
1994 बैच पास आउट
JNV बुकलाना बुलंदशहर U.P.

भारत के ग्रामीण और वंचित वर्गों को आर्थिक मुख्यधारा से जोड़ने में माइक्रोफाइनेंस संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस क्षेत्र में जिन व्यक्तित्वों ने अपने नेतृत्व, दूरदर्शिता और सामाजिक प्रतिबद्धता से नई पहचान बनाई है, उनमें विवेक तिवारी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। वे SATYA Micro Capital Limited के संस्थापक, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी (MD & CEO) हैं। उनके नेतृत्व में SATYA Micro Capital ने देश की अग्रणी माइक्रोफाइनेंस संस्थाओं में अपना स्थान बनाया है तथा लाखों परिवारों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य किया है।

विवेक तिवारी को माइक्रोफाइनेंस एवं विकास क्षेत्र में दो दशकों से अधिक का अनुभव प्राप्त है। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत वित्तीय समावेशन और ग्रामीण विकास से जुड़े कार्यों के माध्यम से की। माइक्रोफाइनेंस उद्योग की चुनौतियों और संभावनाओं को निकटता से समझते हुए उन्होंने विभिन्न संस्थानों में कार्य किया और गरीब तथा वंचित वर्गों तक वित्तीय सेवाएँ पहुँचाने के लिए अनेक प्रयास किए। SATYA Micro Capital की स्थापना से पूर्व वे लगभग आठ वर्षों तक माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र की प्रमुख संस्था Satin Creditcare Network Limited से जुड़े रहे, जहाँ उन्होंने संगठनात्मक विकास और वित्तीय विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

वर्ष 2016 में विवेक तिवारी ने एक ऐसे माइक्रोफाइनेंस संस्थान की कल्पना की जो केवल ऋण वितरण तक सीमित न रहे, बल्कि आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को आत्मनिर्भर बनाने का माध्यम बने। इसी सोच के साथ उन्होंने SATYA Micro-Capital की स्थापना की। संस्था का उद्देश्य था—समाज के उन वर्गों तक वित्तीय सेवाएँ पहुँचाना जिन्हें पारंपरिक बैंकिंग व्यवस्था से पर्याप्त लाभ नहीं मिल पाता।

SATYA ने अपनी परिचालन यात्रा उत्तर प्रदेश के सिकंदराबाद क्षेत्र से प्रारंभ की और बहुत कम समय में देश के अनेक राज्यों तक अपना विस्तार किया। संस्था ने विशेष रूप से ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों की महिला उद्यमियों को प्राथमिकता दी, जिससे हजारों महिलाओं को स्वरोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता का अवसर मिला।



विवेक तिवारी का नेतृत्व नवाचार, पारदर्शिता और सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित है। उनका मानना है कि वित्तीय सेवाएँ केवल व्यवसाय नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम हैं। उन्होंने तकनीक आधारित माइक्रोफाइनेंस मॉडल को बढ़ावा दिया, जिससे ऋण वितरण प्रक्रिया अधिक पारदर्शी, त्वरित और प्रभावी बनी।



उनके नेतृत्व में SATYA MicroCapital ने डिजिटल वित्तीय सेवाओं को अपनाते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय जागरूकता बढ़ाने का भी कार्य किया। संस्था ने महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को अपनी रणनीति का केंद्र बनाया और उन्हें छोटे व्यवसाय स्थापित करने के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई।

विवेक तिवारी का मानना है कि आर्थिक विकास तभी सार्थक है जब उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। इसी सोच के अनुरूप SATYA MicroCapital ने लाखों छोटे उद्यमियों को बिना जमानत के ऋण उपलब्ध कराए और उन्हें आत्मनिर्भर बनने का अवसर दिया। संस्था ने कुछ ही वर्षों में लाखों ग्राहकों तक अपनी पहुँच बनाई तथा हजारों करोड़ रुपये के ऋण वितरण का महत्वपूर्ण मुकाम हासिल किया।

उनके नेतृत्व में संस्था ने महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कई विशेष पहलें शुरू कीं। ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों से जोड़ने के साथ-साथ उन्हें डिजिटल वित्तीय साक्षरता से भी परिचित कराया गया। इससे अनेक परिवारों की आय और जीवन स्तर में सुधार हुआ।

विवेक तिवारी उन उद्यमियों में से हैं जिन्होंने व्यवसाय को सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ जोड़ा है। उनका मानना है कि माइक्रोफाइनेंस केवल ऋण देने का कार्य नहीं, बल्कि लोगों के सपनों को साकार करने का माध्यम है। उनकी कार्यशैली में संवेदनशीलता, नवाचार और परिणामोन्मुख दृष्टिकोण का अनूठा समन्वय दिखाई देता है।

आज वे भारत के माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र के प्रमुख नेताओं में गिने जाते हैं। उनकी दूरदर्शिता और नेतृत्व क्षमता ने SATYA MicroCapital को एक विश्वसनीय एवं प्रभावशाली संस्था के रूप में स्थापित किया है। उनके प्रयास न केवल वित्तीय समावेशन को गति दे रहे हैं, बल्कि लाखों परिवारों के सामाजिक और आर्थिक विकास का आधार भी बन रहे हैं।



भारत में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में माइक्रोफाइनेंस संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ऐसे ही अग्रणी संस्थानों में SATYA MicroCapital Limited का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। यह संस्था ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में रहने वाले निम्न आय वर्ग के परिवारों, विशेष रूप से महिला उद्यमियों को वित्तीय सेवाएँ उपलब्ध कराकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का कार्य कर रही है। संस्था का उद्देश्य केवल ऋण उपलब्ध कराना ही नहीं, बल्कि आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को सतत आजीविका और सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में आगे बढ़ाना भी है।



कंपनी का विज़न वर्ष 2030 तक एक करोड़ (10 मिलियन) परिवारों के सामाजिक-आर्थिक उत्थान में योगदान देना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संस्था लगातार अपने परिचालन क्षेत्र, ग्राहक आधार तथा सेवा नेटवर्क का विस्तार कर रही है।



SATYA MicroCapital का सबसे महत्वपूर्ण योगदान महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में दिखाई देता है। संस्था ने देशभर में लाखों महिला उद्यमियों को वित्तीय सहायता प्रदान की है, जिससे वे छोटे व्यवसाय स्थापित कर सकी हैं और अपने परिवारों की आय बढ़ाने में सफल हुई हैं। कंपनी के अनुसार, उसके माध्यम से 13 लाख से अधिक महिला उद्यमियों तक वित्तीय सेवाएँ पहुँची हैं।

संस्था वर्तमान में भारत के 26 राज्यों में कार्यरत है तथा हजारों गाँवों तक अपनी पहुँच बना चुकी है। इसका व्यापक शाखा नेटवर्क ग्रामीण भारत में वित्तीय समावेशन को मजबूत बनाने में सहायक सिद्ध हुआ है।



SATYA MicroCapital ने अपने संचालन में आधुनिक तकनीकों का व्यापक उपयोग किया है। डिजिटल भुगतान, ई-केवाईसी, पेपरलेस प्रक्रियाएँ तथा डेटा-आधारित जोखिम प्रबंधन प्रणाली संस्था की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इससे ग्राहकों को त्वरित एवं पारदर्शी सेवाएँ प्राप्त होती हैं तथा परिचालन लागत में भी कमी आती है।

कंपनी का मानना है कि तकनीक और मानवीय संवेदनशीलता का संतुलित उपयोग ही वित्तीय समावेशन को अधिक प्रभावी बना सकता है। इसी कारण संस्था डिजिटल नवाचारों को अपने विस्तार का आधार बना रही है।

पिछले कुछ वर्षों में SATYA MicroCapital ने तीव्र विकास दर्ज किया है और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र में अपनी मजबूत उपस्थिति स्थापित की है। कंपनी का विस्तृत शाखा नेटवर्क और बड़ी ग्राहक संख्या इसकी सफलता को दर्शाती है।

हिमालय की गोद में प्रतिभाओं का तीर्थ

जवाहर नवोदय विद्यालय, ताड़ीखेत (अल्मोड़ा): शिक्षा, संस्कार और उत्कृष्टता की अनुपम यात्रा

"जहाँ प्रकृति देती है प्रेरणा और शिक्षा गढ़ती है भविष्य"

विद्यालय का नाम: जवाहर नवोदय विद्यालय, ताड़ीखेत (अल्मोड़ा)
स्थापना वर्ष: 1987
नियमित संचालन प्रारम्भ: 1 अप्रैल 1991
प्रबंधन: नवोदय विद्यालय समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
शिक्षा स्तर: कक्षा VI से XII
बोर्ड: CBSE
स्थान: ताड़ीखेत (रानीखेत), जनपद अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड की मनोहारी पर्वत श्रंखलाओं के मध्य स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय, ताड़ीखेत (अल्मोड़ा) केवल एक विद्यालय नहीं, बल्कि हजारों ग्रामीण विद्यार्थियों के सपनों को साकार करने वाला एक सशक्त शैक्षिक आंदोलन है। अल्मोड़ा जनपद के रमणीय ताड़ीखेत क्षेत्र में स्थित यह संस्थान अपने उत्कृष्ट शैक्षणिक वातावरण, अनुशासन, संस्कारों और राष्ट्रीय मूल्यों के लिए विशेष पहचान रखता है।

वर्ष 1987 में स्थापित तथा 1 अप्रैल 1991 से नियमित रूप से संचालित इस विद्यालय ने तीन दशकों से अधिक समय में असंख्य विद्यार्थियों को सफलता की नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। विद्यालय आज पीएम श्री योजना के अंतर्गत भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है।

नवोदय विद्यालय प्रणाली का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों के मेधावी विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण एवं आवासीय शिक्षा प्रदान करना है। ताड़ीखेत नवोदय इस उद्देश्य को पूर्ण समर्पण के साथ आगे बढ़ा रहा है। यहाँ विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ नैतिक मूल्यों, नेतृत्व क्षमता, आत्मनिर्भरता और सामाजिक उत्तरदायित्व की शिक्षा भी दी जाती है।



विद्यालय का प्राकृतिक परिवेश विद्यार्थियों को अध्ययन, चिंतन और आत्मविकास के लिए आदर्श वातावरण प्रदान करता है। यहाँ का प्रत्येक छात्र केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए नहीं, बल्कि जीवन में उत्कृष्ट नागरिक बनने के लिए तैयार किया जाता है।

नवोदय की सबसे बड़ी विशेषता उसका आवासीय वातावरण है। विभिन्न सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थी एक साथ रहते हैं, सीखते हैं और विकसित होते हैं। इससे उनमें सहयोग, सहिष्णुता, अनुशासन और राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित होती है।



विद्यालय में विज्ञान, गणित, साहित्य, कला, संगीत, योग, खेल तथा सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में विद्यार्थियों को निरंतर प्रोत्साहित किया जाता है। यही कारण है कि ताड़ीखेत नवोदय के विद्यार्थी विभिन्न राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते रहे हैं।

जवाहर नवोदय विद्यालय, ताड़ीखेत ने शैक्षणिक उपलब्धियों के क्षेत्र में उल्लेखनीय पहचान बनाई है। विद्यालय के अनेक छात्र इंजीनियरिंग, चिकित्सा, रक्षा सेवाओं, प्रशासनिक सेवाओं, शिक्षा, अनुसंधान तथा कॉर्पोरेट क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

विद्यालय के समर्पित शिक्षकों और कर्मियों ने सदैव विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को प्राथमिकता दी है। यही कारण है कि यहाँ से निकलने वाले विद्यार्थी देश-विदेश के प्रतिष्ठित संस्थानों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं।

ताड़ीखेत नवोदय के पूर्व छात्र आज विभिन्न क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके हैं—

- भारतीय सेना एवं अर्द्धसैनिक बलों में अधिकारी
- चिकित्सक एवं स्वास्थ्य विशेषज्ञ
- इंजीनियर एवं तकनीकी विशेषज्ञ
- प्रशासनिक एवं राजकीय सेवाओं के अधिकारी
- शिक्षा, अनुसंधान एवं अकादमिक क्षेत्र के विद्वान
- उद्योग, उद्यमिता एवं सामाजिक सेवा के क्षेत्र में अग्रणी व्यक्तित्व



इन सभी की उपलब्धियाँ वर्तमान विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं और नवोदय परिवार की गौरवशाली विरासत को आगे बढ़ाती हैं।

अल्मोड़ा की सांस्कृतिक समृद्धि और प्राकृतिक सौन्दर्य विद्यालय की पहचान का अभिन्न अंग है। विद्यालय में आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम, लोकनृत्य, युवा संसद, विज्ञान प्रदर्शनी, खेलकूद प्रतियोगिताएँ तथा राष्ट्रीय पर्व विद्यार्थियों को अपनी जड़ों से जोड़े रखते हैं।

यहाँ शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि जीवन मूल्यों, संस्कृति और राष्ट्र निर्माण की भावना से भी जुड़ती है।

जवाहर नवोदय विद्यालय, ताड़ीखेत (अल्मोड़ा) ने वर्षों से ग्रामीण प्रतिभाओं को अवसर, दिशा और पहचान प्रदान की है। यह संस्थान शिक्षा, अनुशासन, संस्कार और उत्कृष्टता के उन आदर्शों का प्रतिनिधित्व करता है जिन पर एक सशक्त भारत का निर्माण संभव है।

आज जब हम इस गौरवशाली संस्थान की यात्रा को देखते हैं, तो स्पष्ट होता है कि ताड़ीखेत नवोदय केवल विद्यार्थियों का भविष्य नहीं गढ़ रहा, बल्कि राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की नींव भी मजबूत कर रहा है।

“एक विद्यालय, अनेक सपने — और उन सपनों को साकार करने का संकल्प”

नवोदय सिर्फ स्कूल नहीं, वह तो एक भावना था,
हमारे जीवन की प्रस्तावना था, बचपन की मज़बूत नींव था।

सिसकियों से शुरू हुआ सफ़र, मुस्कुराहटों से भरपूर सजीव था।
मस्ती थी, सख्ती थी, अनुशासन था, पर वो हमारा खूबसूरत आशियाना था।

थे टीचर माता पिता, हर कोई भैया दीदी था, मैस की शैतानियाँ, बचपन की नादानियाँ।
गेम्स टाइम, स्टडी टाइम, रोल कॉल का शोर, डर वो वॉर्डन का, यादों का वो हसीन दौर।

लड़ते थे, झगड़ते थे, पर भाईचारा रखते थे, "हम ही नवोदय हों" कहते, मन से गीत गाते थे,
सात सालों के सफ़र में, हम जीना सीख गए।

जुदा हो गए रास्ते, दिल तो वही पर ठहर गए, नवोदयन थे, नवोदयन हैं हम, नवोदयन ही रह गए!!

स्वरचित और मौलिक,

अनुजा कौशिक
देहरादून (उत्तराखंड)

List of Jawahar Navodaya Vidyalaya in Uttarakhand

1. JAWAHAR NAVODAYA VIDYALAYA, ALMORA Tarikhet, Almora, Uttarakhand –263663
2. AWAHAR NAVODAYA VIDYALAY BAGESHWAR, Simal (Gogina), Kanda Bageshwar, Uttarakhand-263631
3. JAWAHAR NAVODAYA VIDYALAYA CHAMOLI, Pipalkoti, Chamoli, Uttarakhand-246472
4. JAWAHAR NAVODAYA VIDYALAYA CHAMPAWAT, Champawat, Uttarakhand-262523
5. JAWAHAR NAVODAYA VIDYALAYA DEHRADUN, Shankarnagar, Dehradun, Uttarakhand-248197
6. JAWAHAR NAVODAYA VIDYALAYA HARIDWAR, Roshanabad, Haridwar, Uttarakhand-249403
7. JAWAHAR NAVODAYA VIDYALAYA NAINITAL, Gangarkot, Suyalbari, Nainital, Uttarakhand-263135
8. JAWAHAR NAVODAYA VIDYALAYA PAURI GARHWAL, Ekeshwar Pauri Garhwal, Uttarakhand-246131
9. JAWAHAR NAVODAYA VIDYALAYA PITHORAGARH, Gangolihat, Pithoragarh Uttarakhand-262522
10. JAWAHAR NAVODAYA VIDYALAYA RUDRAPRAYAG, Jakholi, Rudraprayag, Uttarakhand-246141
11. JAWAHAR NAVODAYA VIDYALAYA TEHRI GARHWAL, Pokharikhal, Tehri Garhwal, Uttarakhand-249146
12. AWAHAR NAVODAYA VIDYALAYA UDHAM SINGH NAGAR, Rudrapur, Udham Singh NagarUttarakand-263153
13. JAWAHAR NAVODAYA VIDYALAYA, Purola, Uttarkashi, Uttarakhand-249185